डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज आरा

Date 21/07/20
Page

विषय - संस्कृत, बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा)
द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र
कादम्बरी - शुकनासोपदेश
गद्यांश व्याख्या

गुरूपदेशश्च नाम पुरुषाणामखिलमल प्रक्षालनक्षमम् अजलं स्नानम्, अनुपजातपलितादि वैरूप्यमजरं वृद्धत्वम्, अनारोपितमेदो दोषं गुरुकरणम्, असुवर्ण विरचनम् अगाम्यं कर्णाभरणम्, अतीत ज्योति रालोकः, नोद्वेगकरः प्रजागरः।

सान्वय व्याख्या :- (गुरूपदेशश्च नाम) वस्तुतः गुरु का उपदेश (पुरुषाणामखिलमल प्रक्षालनक्षमम्) मनुष्यों के समस्त मलों को धो डालने में समर्थ (अजलं स्नानम्) जल रहित स्नान है। (अनुपजात-पलितादि वैरूप्यमजरं वृद्धत्वम्) श्वेतकेशतादि कुरूपता से रहित और बुढ़ापे से रहित वृद्धत्व है, ~~चर्बी में (वृद्धि आदि) दोषों के~~ (अनारोपित मेदो दोषं गुरुकरणम्) चर्बी में (वृद्धि आदि) दोषों के आरोपण से मुक्त गुरुता (महत्ता) प्रदान करने का साधन है, (असुवर्ण विरचनम्) बिना सोने के बना हुआ (अगाम्यं कर्णाभरणम्) उत्कृष्ट (अगाम्य) कर्णाभूषण है, (अतीत ज्योति रालोकः) भौतिक ज्योति से रहित प्रकाश है, तथा (नोद्वेगकरः प्रजागरः) उद्वेग (बेचैनी) न उत्पन्न करनेवाला जागरण है।

भावार्थ :- यहाँ गुरु की महत्ता को प्रस्तुत करते हुए कहा गया है कि जिस प्रकार जल से स्नान

Scanned with CamScanner

करने से शरीर का मैल पूरी तरह धुल जाता है, उसी प्रकार गुरु का उपदेश भी काम-क्रोध आदि मानसिक विकारों को दूर करने में समर्थ स्नान ही है। अन्तर इतना है कि यह स्नान जल के बिना ही हो जाता है। इसी प्रकार साधारणतः बाल पक जाने पर, झुर्रिया पड़ने पर तथा अङ्ग शिथिल हो जाने पर व्यक्ति वृद्ध समझा जाता है किन्तु गुरु का उपदेश शान्ति एवं सदसद्विवेक देने के कारण ऐसा वृद्धत्व (बड़प्पन) है जिसमें बालों का सफेद होना आदि विकार नहीं आते हैं और न ही शरीर में किसी प्रकार की जीर्णता आती है। श्वेतकेशता आदि विकारों का न होना तथा जरा का न होना इस वृद्धत्व का वैशिष्ट्य है। चर्बी के चढ़ने से मनुष्य में गुरुता आती है किन्तु गुरु का उपदेश मेदोदोष के बिना ही गुरुता (महत्ता) प्रदान करता है। गुरु का उपदेश तो स्वर्ण निर्मित न होने पर भी अति सुन्दर कर्णभूषण है, क्योंकि कर्णगोचर होने के साथ ही चित्त को सुशोभित करता है। सोने से बने आभूषण में कलात्मकता के अभाव में अथवा कस चढ़ जाने से ग्राम्यता दोष आजाता है किन्तु गुरु के वचन अश्लीलतारूप ग्राम्यदोष से सर्वथा मुक्त होते हैं। सूर्य आदि पदार्थों से उत्पन्न प्रकाशों (दाहक) तेज विद्यमान रहता है किन्तु गुरु का उपदेश ऐसा ज्ञान का

Scanned with CamScanner

प्रकाश है जिसमें चौंध नहीं होती। रात्रिजागरण सदा उद्विग्नता या बेचैनी पैदा करता है किन्तु गुरु का उपदेश ऐसी जागृति है जिससे शरीर को बेचैनी या थकावट नहीं होती। यह जागरण जीवन के प्रत्येक पग में सावधानी प्रदान करके उद्वेग को समाप्त करने वाला होता है।

टिप्पणी – अखिलमलप्रक्षालनक्षमम् = अखिलाश्च ते मला (कर्मधा०) तेषां प्रक्षालनम् – अखिलमलप्रक्षालनम् (ष० तत्पु०) अखिलमलप्रक्षालने क्षमम् (स० तत्पु०)। अनुपजातपलितादिवैरूप्यम् न उपजातम् अनुपजातं (नञ्) अनुपजातं पलितादिवैरूप्यं यस्मिन् तत् (बहु०) वैरूप्यम् – विगतं रूपं यस्मात् विरूपम् (बहु०) विरूपस्य भावः (विरूप + ष्यञ्) वैरूप्यम्, अनारोपितमेदोदोषम् – न आरोपितः अनारोपितः मेदो-दोषः येन तद् अनारोपितमेदोदोषम् (बहु०)। गुरुकरणम् – न गुरुः अगुरुः, अगुरुं गुरुं करोति, गुरु + च्वि (अभूततद्भावे च्वि) कृ + ल्युट् = स्थूलत्व व महत्ता करने वाला।
असुवर्णविरचनम् – सुवर्णेन विरचनं सुवर्णविरचनम् (तृ० तत्पु०) न सुवर्णविरचनं यस्मिन् तत् (नञ्, बहु०)। अग्राम्यम् – ग्रामस्य इति ग्राम्यम्, (ग्राम + यत्) न ग्राम्यम् (नञ्)। उद्वेगकरः = उद्वेगं (उद्गतो वेगोऽस्मात् इति उद्वेगः, उत् + विज् + घञ् = उद्वेग, कृ + क (इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः) कष्टकर, विकलता देने वाला। प्रजागरः – (पुं०) प्रकृष्टः जागरः (प्र + जागृ + अप्) = निद्रा का अभाव, सावधानी।